SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter
सफलता से सिद्धि तक
जनवरी 2026

ग्रामीण बच्चों के सपनों को मिले 'कलाम' के पंख:

50 स्कूलों के नन्हे वैज्ञानिकों ने दिखाया हुनर

भिलाई/राजनांदगांव

ग्रामीण अंचल के बच्चों में विज्ञान के प्रति झिझक मिटाने और उनमें तार्किक सोच विकसित करने के उद्देश्य से 'मैं भी कलाम ' विज्ञान मेला 2026' का भव्य आयोजन किया गया। 'संकल्प एक प्रयास' संस्था द्वारा आयोजित इस मेले ने न केवल बच्चों की रचनात्मकता को मंच दिया, बल्कि उन्हें भविष्य के वैज्ञानिक बनने की दिशा में प्रेरित भी किया।

आयोजन की मुख्य विशेषताएं :

व्यापक सहभागिता : इस वर्ष यह आयोजन 50 सरकारी स्कूलों में हुआ, जिसमें 250 गांवों के बच्चे शामिल हुए।

कबाड़ से जुगाड़ : मेले का मुख्य आकर्षण बच्चों द्वारा निर्मित मॉडल रहे। अधिकांश मॉडल बेकार की वस्तुओं (Waste Material) से बनाए गए थे, जो बच्चों की नवाचारी सोच को दर्शाते हैं।

कक्षावार प्रदर्शन : प्रत्येक केंद्र पर लगभग 40-45 मॉडल प्रदर्शित किए गए। इनमें कक्षा 6वीं, 7वीं और 8वीं के बच्चों ने अपनी समझ के अनुसार बेहतरीन मॉडल तैयार किए।

सीखने की निरंतरता : खास बात यह रही कि जिन बच्चों ने पिछली कक्षाओं में मॉडल बनाना सीखा था, उन्होंने इस वर्ष LRC (Learning Resource Centre) शिक्षकों के मार्गदर्शन में अधिक उन्नत और नए कॉन्सेप्ट वाले मॉडल पेश किए।

गरिमामयी उपस्थिति:

कार्यक्रम की सोभा बढ़ाई

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री नील कुमार जी (मुख्य महाप्रबंधक एवं व्यापार इकाई प्रमुख, NSPCL भिलाई) ,श्री परिमल सिन्हा जी (संस्थापक, संकल्प एक प्रयास) ,टॉलमी मैम (नीति आयोग), अनूप मिश्रा (चाइल्ड हेल्पलाइन), शालिनी यादव, शालिनी साहू (सोमानी थाना) जय श्री साहू, अपूर्वा (महिला एवं बाल विकास), साथ ही स्थानीय सरपंच, सचिव, प्राचार्य ,'सीख' 'सृजन' व 'गरिमा' फेलोज सहित एडमिन स्टाफ उपस्थित रहे।

विशिष्ट अतिथियों का प्रेरणादायी संबोधन

श्री नील कुमार जी ने कहा कि "विज्ञान मेले ग्रामीण बच्चों में वैज्ञानिक सोच, आत्मविश्वास और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे नन्हे मुन्ने बच्चे कलाम बनने की ओर कदम बढ़ा चुके हैं।"

नीति आयोग से दिव्या मैम ने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि संकल्प एक प्रयास का अर्थ ही है—किसी लक्ष्य के लिए संकल्पबद्ध होकर प्रयास करना। उन्होंने चंद्रयान और ट्रैफिक नियमों पर आधारित मॉडल्स की विशेष प्रशंसा की।

उद्देश्य: डर को जीत में बदलना

इस मेले का प्राथमिक लक्ष्य बच्चों के मन से विज्ञान विषय के प्रति डर को हटाना है। LRC केंद्रों में मॉडल बनाने की प्रक्रिया 'करके सीखने' (Learning by Doing) पर आधारित है, ताकि छात्र आगे चलकर 11वीं और 12वीं कक्षा में आत्मविश्वास के साथ विज्ञान विषय का चयन कर सकें।

जहाँ चाह, वहाँ राह

गरिमा प्रोजेक्ट की प्रेरणादायक पहल

गरिमा प्रोजेक्ट के अंतर्गत समुदाय के किशोरों, महिलाओं एवं आम नागरिकों के स्वास्थ्य को लेकर टीम की प्रतिबद्धता उस समय और अधिक स्पष्ट दिखाई दी, जब सीमित संसाधनों एवं बजट की कमी जैसी चुनौतियाँ सामने आईं। इन परिस्थितियों के बावजूद गरिमा टीम ने अपने उद्देश्य से पीछे हटने के बजाय नवाचार और सहयोग का रास्ता चुना।

टीम द्वारा स्थानीय आयुष्मान आरोग्य मंदिर स्वास्थ्य केंद्र से समन्वय (Collaboration) स्थापित कर एक संयुक्त प्रयास के रूप में स्वास्थ्य शिविर (हेल्थ कैंप) का आयोजन किया गया। इस सहयोग से न केवल संसाधनों की कमी की पूर्ति संभव हुई, बल्कि समुदाय तक आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने में भी सफलता मिली।

इस हेल्थ कैंप के माध्यम से समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य जांच, परामर्श, प्राथमिक उपचार, एवं स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता प्रदान की गई। विशेष रूप से महिलाओं, किशोरियों और वंचित वर्गों ने इस पहल से लाभ उठाया। स्वास्थ्य कर्मियों और गरिमा टीम के संयुक्त प्रयास से कैंप को सुव्यवस्थित, सहभागी और प्रभावी ढंग से संचालित किया गया।

यह पहल इस बात का सशक्त उदाहरण है कि जब लक्ष्य स्पष्ट हो और टीम में प्रतिबद्धता हो, तो सीमित संसाधन भी बाधा नहीं बनते। गरिमा प्रोजेक्ट की यह कोशिश न केवल सामुदायिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि यह स्थानीय संस्थाओं के साथ साझेदारी और सामूहिक प्रयास की शक्ति को भी दर्शाती है।

गरिमा फेलोस के शीतकालीन कैम्प में 60 गांवों के बच्चों ने सीखा आत्मरक्षा और स्वावलंबन का पाठ

गरिमा मंच : ग्रामीण बच्चों और महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु 'गरिमा फेलोस' द्वारा आयोजित पांच दिवसीय शीतकालीन कैम्प का सफल समापन हुआ। 23 से 27 दिसंबर तक चले इस शिविर में 60 गांवों के करीब 470 बालक-बालिकाओं और महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रमुख गतिविधियाँ और सीख :-

कैम्प के दौरान खेल-कूद और कलात्मक गतिविधियों के साथ-साथ गंभीर सामाजिक विषयों पर सत्र आयोजित किए गए। इसमें मुख्य रूप से:

सुरक्षा : गुड टच-बैड टच, पॉक्सो एक्ट और साइबर सुरक्षा की जानकारी दी गई।

स्वास्थ्य : महिलाओं और किशोरियों को मासिक धर्म स्वच्छता (MHM) और पोषण के प्रति जागरूक किया गया।

कौशल : वित्तीय साक्षरता, करियर गाइडेंस और आत्मविश्वास निर्माण पर जोर दिया गया।

ग्रामीण क्षेत्र में बदलाव की लहर :-

इस कैम्प का सबसे बड़ा लाभ ग्रामीण परिवेश के उन बच्चों को मिला जिनके पास संसाधनों का अभाव है।

झिझक का अंत : स्वास्थ्य और अधिकारों जैसे विषयों पर खुलकर चर्चा से किशोरियों में आत्मविश्वास बढ़ा।

सशक्तिकरण : महिलाओं ने घरेलू बजट और सरकारी योजनाओं की बारीकियां सीखीं।

नेतृत्व क्षमता : खेल और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में टीम वर्क और लीडरशिप के गुण विकसित हुए।

निष्कर्ष : कार्यक्रम में उपस्थित उपसरपंच और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने गरिमा मंच के इस प्रयास की सराहना की। ग्रामीणों ने भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की मांग की ताकि नई पीढ़ी जागरूक और आत्मनिर्भर बन सके।

सवेरा
सपनों की नई उड़ान

12 जनवरी 2026 की वह सुबह महज़ एक जयंती नहीं, बल्कि हज़ारों युवाओं के लिए बदलाव का पैगाम लेकर आई। 'गरिमा फेलोज़' ने स्वामी विवेकानंद के विचारों को ज़मीन पर उतारते हुए गाँवों और स्कूलों में करियर की नई अलख जगाई।

गाँव की चौपालों और स्कूलों के कमरों में कुल 52 सत्र आयोजित किए गए। यहाँ 1800 से अधिक युवाओं, विशेषकर लड़कियों और महिलाओं को यह सिखाया गया कि "स्वस्थ शरीर और निडर मन" ही एक सफल करियर की नींव है। सत्रों में जब माहवारी स्वच्छता और आत्म-सुरक्षा की बात हुई, तो बरसों की झिझक टूट गई।

कहानी में नया मोड़ तब आया जब 'शाला त्यागी' (ड्रॉपआउट) बच्चों ने फिर से कलम थामने का संकल्प लिया। बाल विवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ बुलंद करते हुए, इन युवाओं ने सीखा कि लक्ष्य कैसे तय किए जाते हैं।

परिणाम:

स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा से आज उन बच्चों की आँखों में डर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास है। वे अब सिर्फ छात्र नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति सजग 'कल के निर्माता' बन चुके हैं। अंधकार छंट चुका था और शिक्षा की मशाल जल उठी थी।

देवदा में 'माहवारी स्वच्छता' पर बदली सोच,
घर-घर पहुँच रही सुरक्षित डिस्पोजल तकनीक

देवदा/छत्तीसगढ़ | 19 जनवरी 2026

ग्राम देवदा के रोजगार गारंटी स्थल पर माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (MHM) को लेकर आयोजित एक विशेष कार्यशाला के दूरगामी परिणाम सामने आने लगे हैं। 6 जनवरी को आयोजित इस सत्र में महिलाओं को न केवल स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया, बल्कि इस्तेमाल किए गए सैनिटरी पैड के सुरक्षित निपटान के लिए 'भस्मक (इन्सिनेरेशन) मटका विधि' का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया।

इस जागरूकता अभियान की सफलता तब सिद्ध हुई, जब 14 जनवरी को फॉलो-अप के दौरान एक महिला ने गर्व से साझा किया कि उन्होंने अपने घर में इस विधि को अपना लिया है। सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए, उनके ससुर जी ने स्वयं मटके में छेद कर इस डिस्पोजल यूनिट को तैयार करने में मदद की। 'गरिमा मंच' के माध्यम से आसपास के गांवों में भी यह अलख जगाई जा रही है, जिससे माहवारी साक्षरता एक जन-आंदोलन का रूप ले रही है।

ग्रामीण एवं मीन क्षेत्र की महिलाओं को होने वाले प्रमुख लाभ

1. स्वास्थ्य और संक्रमण से सुरक्षा

- **बीमारियों में कमी**: इस्तेमाल किए गए पैड को खुले में फेंकने से हेपेटाइटिस और टिटनेस जैसे संक्रमण का खतरा रहता है। मटका विधि से पैड जल जाने के कारण हानिकारक बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं।
- **प्रजनन स्वास्थ्य:** स्वच्छता के सही तरीकों को जानने से महिलाओं में 'यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन' (UTI) और अन्य गुप्त रोगों की संभावना कम हो जाती है।

2. सामाजिक गरिमा और गोपनीयता

- **झिझक से मुक्ति :** अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं पैड को फेंकने की जगह न होने के कारण उसे छिपाकर रखती हैं या असुरक्षित तरीके से दबाती हैं। घर पर भस्मक विधि होने से उन्हें गोपनीयता और गरिमा मिलती है।
- **पारिवारिक समर्थन :** जब परिवार के पुरुष सदस्य इस प्रक्रिया में मदद करते हैं, तो समाज में माहवारी से जुड़ी 'शर्म' खत्म होती है और महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. पर्यावरण और स्वच्छता

- **जल स्रोतों का संरक्षण**: मीन या ग्रामीण क्षेत्रों में पैड अक्सर तालाबों या नालियों में फेंक दिए जाते हैं, जिससे जल प्रदूषित होता है। मटका विधि इस प्रदूषण को पूरी तरह रोकती है।
- **मृदा उर्वरता :** प्लास्टिक युक्त पैड मिट्टी में नहीं गलते। इन्हें जलाकर राख बनाना कचरा प्रबंधन का सबसे प्रभावी स्थानीय तरीका है।

4. आर्थिक बचत (कम लागत मॉडल)

महंगे इलेक्ट्रिक भस्मक (Incinerator) की तुलना में 'मटका विधि' शून्य या बहुत कम लागत में तैयार हो जाती है, जो ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से सुलभ है।

सुरक्षा का संदेश : "सुरक्षित डिस्पोजल केवल कूड़ा फेंकना नहीं, बल्कि अपनी और अपने परिवार की सेहत को सुरक्षित करना है।"

गांवों में कैसे आएगा बदलाव ?

मुक्तांगन का यह प्रशिक्षण इन फेलोज को 'शिक्षक' से 'लीडर' में बदल रहा है। जब ये ग्रामीण क्षेत्रों में उतरेंगे, तो:

जमीनी बदलाव : गांवों के छोटे शिक्षण केंद्रों को वे आधुनिक 'लर्निंग हब' बनाएंगे।

कम खर्च, बेहतर शिक्षा : स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर वे शिक्षा को रोचक और सस्ता बनाएंगे।

समुदाय का विकास : वे न केवल बच्चों को शिक्षित करेंगे, बल्कि ग्रामीणों के बीच शिक्षा के प्रति एक नई चेतना जगाएंगे।

" प्रशिक्षण से परिवर्तन तक "

मुक्तांगन में तैयार हो रहे हैं , ग्रामीण भारत के भावी " चेजमेंकर्स "

मुंबई: शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव की एक नई लहर शुरू हो चुकी है। 'सीख बैच 2' के उत्साही फेलोज ने मुंबई के प्रतिष्ठित मुक्तांगन एजुकेशन फाउंडेशन में अपना गहन प्रशिक्षण (Training) शुरू कर दिया है। इनका लक्ष्य केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत की शिक्षा व्यवस्था का कायाकल्प करना है।

प्रशिक्षण का सार: क्या सीखेंगे ये फेलोज ?

इस ट्रेनिंग का मूल मंत्र है—"करके सीखना"। यहाँ फेलोज को निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर तैयार किया जा रहा है:

प्रैक्टिकल एक्सपोज़र : किताबी ज्ञान से हटकर सीधे क्लासरूम में बच्चों के साथ जुड़ने का अनुभव।

इनोवेटिव पेडागोजी : खेल-खेल में और रचनात्मक तरीकों से कठिन विषयों को आसान बनाना।

इमोशनल इंटेलिजेंस : बच्चों की भावनाओं को समझना और उनके साथ एक गहरा जुड़ाव बनाना।

"आज का फेलोज, कल का लीडर"

मुक्तांगन से निकलकर अब गांवों की बारी।

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज"

सीख : प्रोग्राम

फेलो
49

सामुदायिक शिक्षक
494

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
250 (11600 छात्र)

ई-मर्ज (डिजिटल कक्षाएं)
178

विलेज लेवल शिक्षा समिति (ABG सपोर्ट समूह)
217

सीख पीयर लीडर
1297

नवोदय परीक्षार्थी
2141

सहभागी पालक
2718

सृजन: प्रोग्राम

फेलो
39

सामुदायिक शिक्षक
432

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
246 (8191 छात्र)

ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं)
56

विलेज लेवल शिक्षा समिति
24

सृजन पीयर लीडर
381

NMMSE प्रयासरत छात्र
1100

नवोदय विद्यार्थी
225

सहभागी पालक
942

स्टेम वर्कशॉप
115 (2056 छात्र)

कंप्यूटर लैब
15 (951 छात्र)

होम विजिट
552

गरिमा : प्रोग्राम

फेलो
42

गरिमा मंच
212 (5536 प्रतिभागी)

स्कूल कार्यशाला
575 (14509 छात्र)

किशोर सभा
315 (3780 छात्र सदस्य)

ABG सपोर्ट समूह
45

होम विजिट
91

जागरूकता कार्यक्रम (नुक्कड़-नाटक)
90 सत्र

गरिमा पीयर एजुकेटर
26

SBI छात्रवृति सहयोग
68

SIR सहयोग
86 परिवार

बाल विवाह मुक्त ग्राम
150

मेरे प्रिय साथियों और पाठकों,

जनवरी 2026 का यह समय 'संकल्प एक प्रयास' की यात्रा में एक ऐतिहासिक मोड़ है। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे केवल आंकड़े नहीं, बल्कि उन हज़ारों युवाओं और महिलाओं के मुस्कुराते चेहरे दिखाई देते हैं, जिनके सपनों को हमने मिलकर नई उड़ान दी है। 'सीख' फेलोज़ ने मुंबई से लेकर छत्तीसगढ़ के सुदूर गांवों तक शिक्षा और जागरूकता की नई अलख जगाई है। 'मैं भी कलाम' विज्ञान मेले के माध्यम से 250 गांवों के नन्हे वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया कि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती।

देवदा जैसे गांवों में माहवारी स्वच्छता पर टूटी झिझक और 'भस्मक मटका विधि' का अपनाना हमारे 'जन-आंदोलन' की सफलता का प्रमाण है। शीतकालीन शिविरों में 60 गांवों के बच्चों ने आत्मरक्षा और स्वावलंबन का जो पाठ सीखा है, वही कल के सशक्त भारत की नींव रखेगा। 'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना अब धरातल पर उतर रही है। सीमित संसाधनों और चुनौतियों के बावजूद हमारी टीम ने नवाचार और सहयोग से हर बाधा को पार किया है। हमारी यात्रा लंबी है, लेकिन हमारे हौसले बुलंद हैं।

आइए, हम सब मिलकर शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन की इस मशाल को हर उस घर तक पहुँचाएँ जहाँ अब भी अंधेरा है।

शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends – Helping Good NGOs Perform Better – MUMBAI
SARDA – SARDA ENERGY & MINERALS LTD.
DONATEKART
Arpan Foundation
Asha for Education – Bringing hope through education
muktangan – learning & growing together
आविष्कार – गणित-विज्ञान की एक प्रयोगशाला – Aavishkaar – Center for Science, Math, Arts and Technology
phf Paul Hamlyn Foundation
INVOLVE – Building Tomorrow
VIKAS SAMVAD
अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP – Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS